विद्यापतिकृत 'कीर्तिगाथा': एक अवलोकन

1. निशु कुमारी, 2.डा. विजयेन्द्र झा

[1] एम. ए., यूजीसी- नेट, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार, भारत

[2] पूर्व प्रधानाचार्य, सम्प्रति-अध्यक्ष, मैथिली विभाग, ललित नारायण तिरहुत महाविद्यालय (अंगीभूत एकाइ, बी. आर. ए. बी.यू.) मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

सारांश- महाकवि विद्यापतिक तेसर अवहट्ठकृति थिक, जाहि मध्य चारि भाषा संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ठ आ' मैथिलीक पद गुम्फित अछि। मुदा, एहिमे संस्कृतक नओ, प्राकृतक तीनकीर्तिगाथा, मैथिलीक तीन संख्यक पद अछि तथा शेष बहुलांश पद अवहट्ठहिमे अछि। एहि पोथीक प्रत्येक पद छन्दबद्ध अछि जे पदक संगहि लिखल अछि। दूइ "विलास"मे विभक्त एहि पोथीमे कुल 42 गोट पद अछि। एकर प्रारम्भिक आ' अन्तिम अंश खंडित अछि। पोथीक प्रारभ गणेश वंदनासँ होइत अछि,जाहिमे कवि संसारक सकल विघ्नहर्ता गणेशजीकेँ नमन करैत एहन कामना करैत छथि जे हुनक ई वाणी अर्थात् कीर्तिगाथामे उद्धृत वाणी सज्जनक कण्ठमे बसि दिग्दिगन्त धरि पसरत। पश्चात् ओइनवारवंशीय उत्तर मिथिलाक लोकप्रिय सामन्त अर्जुन राएक यशोगान कएल गेल अछि। कीर्तिगाथाक दोसर विलासमे अर्जुन रायक राजदरबार, हुनक दैनन्दिन जीवन, प्रजागणक सुख-शान्ति, ज्ञान-विज्ञान आदिक वर्णन भेल अछि पश्चात् समस्त कथा शृंगाररससँ आप्लावित अछि, जाहि मध्य नायिकाक विविध अंग -प्रत्यंगक वर्णन, नायिका - प्रभेद, केलिक्रीडा आदिक वर्णनक विस्तारसँ भेल अछि।

एहि अर्जुन राएक पिता त्रिपुरसिंह, पितामह भवेश्वर सिंह छलाह। विद्यापतिक संपोषक प्रसिद्ध शिवसिंह ,जनिक पिता देवसिंह छलाह,सेहो एही भवेश्वर सिंहक पौत्र छलाह। एहि प्रकारेँ अर्जुन राए शिवसिंहक पितिऔत छलाह। पूर्व राजपंडित ओइनवार वंशीय महाराज कामेश्वर ठाकुर (1340) क स्वर्गारोहनक पश्चात् मिथिलामे तीन गोट राज शाखा 1342 -1400 ई. मध्य सामानान्तर रूपेँ राज करैत छल। एहिमे दक्षिण मिथिलाक राजा भोगेश्वर राय भेलाह, जनिक पुत्र राए गणेश्व आ' पौत्र महाराज कीर्तिसिंह भेलाह। एही कीर्तिसिंहक विजय-कीर्तिक वर्णन विद्यापति "कीर्तिलता"मे कएने छथि। उत्तर मिथिलाक राजा भवेश्वर सिंह छलाह जिनक पुत्र देव सिंह आ' पौत्र विद्यापतिक मित्र आ' संपोषक महाराज शिवसिंह (1402-1406) छलाह।एही शिवसिंहक वीरताक यशोगान "कीर्तिपताका"मे भेल अछि। तेसर शाखा छल भवेश्वर सिंहक दोसर पुत्र त्रिपुर सिंहक पुत्र अर्जुन राएक (शाम्बसिंहक) , जनिक पुरुषार्थक वर्णन विद्यापति अपन "कीर्तिगाथा" मे कएने छथि। एहि प्रकारेँ विद्यापति तात्कालीन मिथिलाक तीनू शाखाक राजालोकनिक यशोगान अपन तीनू अवहट्ठ कृति कीर्तिलता, कीर्तिगाथा, कीर्तिपताकामे कएने छथि। एहि तीनू राज्यमे परस्पर विरोध छल। एक राजाक दरबारमे दोसर राजाक दरबारीलोकनिक प्रवेश वर्जित छल। जकर प्रमाण ई जे तीनू दरबारक चर्चित व्यक्ति सर्वथा भिन्न छथि।मुदा, महाकवि विद्यापति एकर अपवादक रूपमे छलाह।

निष्कर्षतः विद्यापतिकृत कीर्तिगाथा ने मात्र एकटा साहित्यिक ग्रन्थ थिक, अपितु ई प्राच्य मिथिलाक ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विरासतक दस्तावेज थिक।

बीज-शब्दः अवहट्ठ, अर्जुन राए, कीर्तिगाथा, कीर्तिपताका, नवजयदेव, मैथिली, पाण्डुलिपि, प्रबन्धकाव्य, प्राकृत, भीषमकवि, लेखाशुद्धि, संस्कृत, संपादन,

प्रस्तावना

महाकवि विद्यापतिक अद्यावधि तीनि भाषा-संस्कृत, अवहट्ठ (अपभ्रंश) आ' मैथिलीमे रचना भेटैत अछि। ओना प्राकृत आ' बङला समेत महाकवि छओ भाषा- 'संस्कृत', 'प्राकृत', 'अवहट्ठ', 'मैथिली', 'फारसी' आ' 'बङला'क ज्ञाता छलाह। हिनक संस्कृत, अवहट्ठ आ' मैथिलीमे रचित पोथीक अवलोकनसँ प्राकृत, फारसी आदि भाषाक प्रमाण भेटि जाइछ, संगहि आदिकालहिसँ मैथिली आ' बङला लिपिमे साम्यता रहबाक कारणेँ मैथिलीक विद्वान् लोकनि बङला आ' बङलाक विद्वान् लोकनि मैथिली भाषा सहजतासँ लिखि-पढ़ि लैत छलाह। महाकवि विद्यापतिक अवहट्ठक मात्र तीनगोट पोथी - कीर्तिलता, कीर्तिगाथा (हरिकेलि) आ' कीर्तिपताका उपलब्ध अछि। एहिठाम प्रस्तुत आलेख 'कीर्तिगाथा'पर केन्द्रित अछि।

कवि कोकिल विद्यापति वर्णनात्मक आ' कथा-काव्य शैलीमे अवहट्ठ (अपभ्रंश) मे रचना कएलनि। मैथिली अवहट्ठ मागधी प्राकृत ओ आधुनिक देशीय भाषाक मध्यक भाषा थिक। अपन समकालीनन विद्वान् लोकनिक मध्य विद्यापति जे ख्याति पओलनि से हुनक प्रबन्धकाव्य ओ गीति ल' कए। हिनक प्रबन्ध आ' वर्णनात्मक काव्यसभ मैथिली अवहट्ठ (अपभ्रंश) मे निबद्ध अछि, जे आधुनिक भाषा मैथिलीक संधि-स्थलकेँ जोड़ैत अछि। कीर्तिगाथा (1402-05 ई.) महाकवि विद्यापतिक दोसर अवहट्ठ रचना थिकनि; मुदा पूर्वमे हिनक दू गोट अवहट्ठक पोथी 'कीर्तिलता' (1402-05 ई.) आ' 'कीर्तिपताका' (1406-14 ई.) क नामे प्रकाशित भ' चुकल अछि, तेँ आब कीर्तिगाथाकेँ तेसर पोथी मानबे उचित होयत। उपर्युक्त तीनू अवहट्ठ ग्रन्थक मूल पाण्डुलिपि सम्प्रति नेपालक राष्ट्रीय अभिलेखालयमे संरक्षित अछि, एकटा तालपत्रपर तिरहुतामे आ' दोसर बसहा कागतपर नेवारीमे। मुदा, कीर्तिपताकाक एके प्रति अछि जे तालपत्रपर तिरहुतामे लिखल अछि। वर्तमानमे जे कीर्तिपताका नामधारी विद्यापतिकृत पोथीक सम्पादन विभिन्न विद्वान् लोकनि द्वारा भेल अछि, ओहिमे कीर्तिगाथा आ' भीषम कविकृत कोनो 'प्रबन्धकाव्य 'क एक तालपत्रक पाण्डुलिपि चिपकल छल, जकरा एकहि पोथी बूझि कीर्तिपताकाक नामे संपादित आ' प्रकाशित करबाओल गेल अछि।

कीर्तिलता, कीर्तिगाथा, कीर्तिपताका आ' भीषम कविकृत प्रबन्धकाव्य-एहि चारू ग्रन्थक अन्वेषण करबाक श्रेय बङालक विद्वान् महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्रीकेँ छन्हि। 1898 ई.क अपन नेपाल-यात्राक क्रममे हुनका काठमाण्डूक दरबार लाइब्रेरीमे उक्त चारू पोथीक पाण्डुलिपि देखबाक सुयोग भेटलनि। ओ तकर प्रतिलिपि कराए लेलनि; मुदा ताहिसँ हुनका संतोष नहि भेटलनि। पुनः जखन म.म. शास्त्री 1922 ई.मे काठमाण्डू गेलाह तँ महाराज शमशेर जंग बहादुरक अनुग्रहसँ उपर्युक्त ग्रन्थसभक मूल पाण्डुलिपि उपलब्ध भ' गेलनि। सन् 1924 ई.मे ओ कीर्तिलताकेँ सम्पादित क' प्रकाशित करबओलनि, जे नेवारी लिपिमे लिखित प्रतिलिपिपर आधारित अछि। एकर जे तिरहुता लिपिक प्रति छल, से प्रायः उपलब्ध नहि भ' सकलनि। मुदा, ओहि समय ओ तीनू ग्रन्थ कीर्तिपताका (जकरा संग कीर्तिगाथा आ' भीषमकृत प्रबंधक अंश सेहो सटल छल) केँ प्रकाशित करबाक लेल बेसी उत्साहित नहि छलाह। एकर मूल कारण छल जे हुनका लेल एहि पाण्डुलिपसभकेँ ठीकसँ पढब संभव नहि भेलनि। तथापि म.म. शास्त्री एतेक संकेत अवश्य देलनि जे कीर्तिपताकाक पाण्डुलिपि खण्डित आ' 8 सँ 29 धरिक एकर पत्र त्रुटित अछि। संभव थिक

तेँ एकर संस्करणक लेल ओ प्रवृत्त नहि भेल होथि। अन्ततः कीर्तिलताक पाण्डुलिपिक संगहि ओ कीर्तिपताका आ' अन्य (कीर्तिगाथा) क पाण्डुलिपिकेँ सेहो आपस क' देलथिन। पश्चात् कीर्तिलताक किछु प्रति अन्यत्रहुँ उपलब्ध भेल, जकर पाठक परिष्कार विभिन्न संस्करणक माध्यमे कएल गेल अछि। मुदा, अन्य पाण्डुलिपि (कीर्तिगाथा, कीर्तिपताका आ' भीषमकृत प्रबंधकाव्य) क लेल, जकर एकमात्र प्रति नेपालक पाण्डुलिप अछि, एहन कोनो प्रयास नहि भ' सकल, जाहिसँ एकर समीचीन पाठ उपलब्ध भ' सकए।

निष्कर्षतः उपर्युक्त तीनू अवहट्ठ पोथी-कीर्तिलता (1402-05 ई.), कीर्तिगाथा (1402-05 ई.) तथा कीर्तिपताका (1406-14 ई.) विद्यापतिक रचना छनि जाहिमे कीर्तिगाथाक रचयिताक रूपमे " नवजयदेव" (पद 6, पृ. 11, अर्थात् अभिनव विद्यापति) लिखल अछि आ' शेप दुनू ग्रन्थक रचयिताक रूपमे 'विद्यापति' अंकित अछि।

कीर्तिगाथाक पाण्डुलिपि

कीर्तिगाथा आ' कीर्तिपताकाक पाण्डुलिपि म.म. हरप्रसाद शास्त्री लेल पढ़ब संभव नहि भेलनि, जे ओ स्वयं स्वीकारने छथि। संभव जे प्रतिलिपिकार एकरा ठीकसँ उतारने नहि होथि; मुदा मूल पाण्डुलिपिक प्रसंग ई बात प्रासंगिक नहि अछि। मूल पाण्डुलिपिक छाया-प्रति देखला सन्ताँ ई नहि बुझना जाइछ जे एकरा पढ़ब असंभव। हँ, एतबा धरि सत्य जे पढ़बा खन थोड़ेक श्रम अवश्य करय पड़ैछ। कीर्तिगाथाक आरंभिक सातो तालपत्र अद्यावधि सुरक्षित अछि। तखन इहो बात सत्य जे एहिमे वर्णाशुद्धि आ' मात्राक त्रुटि अवश्य अछि तथा पद्च्छेदक अभावमे एकर शब्दसभकेँ फुटकाएब एकटा दुरूह काज अवश्य अछि। तालपत्रक पाठ धारावाहिक रहबाक कारणेँ एकर पद्यांशमे गद्य सदृश आभास भेटैत अछि। एकर वर्ण ब, व तथा र मे; ण, न तथा ल मे; उ आ' ड मे; तु तथा त्त मे; 'न्त' आओर 'तु' मे; ङ्ग, कु तथा हु मे; ङ्ग आ' ङ्क मे लिपिकारक प्रमादेंँ अनेक ठाम पढ़बाक असौकर्य उत्पन्न होइछ। पाण्डुलिपिक प्रत्येक पृष्ठमे पाँच-पाँच गोट पाँती, ओना किछु पृष्ठ एहनो अछि जाहिमे तीन-तीन पाँती अछि। संभव थिक जे एकर लिपिकार वएह 'होरिल' होथि, जे ल.स. 426 (1535 ई.) मे एहि पाण्डुलिपिकेँ प्रस्तुत कएने छलाह। मुदा, एहिमे संदेह जे कीर्तिगाथा, कीर्तिपताका आ' भीषमकृत 'प्रबंधकाव्य 'क खण्डित अंश हुनकहिँ हाथक उतारल होअए; कारण एकर लेखमे अन्तर बूझि पड़ैछ। वस्तुतः कीर्तिगाथाक पाण्डुलिपि खंडित अछि। एकर प्रारंभिक सात गोट तड़िपतक, जाहिमे कुल पृष्ठ संख्या 13 अछि, तकर पश्चात् ग्रन्थमे व्यतिक्रम अछि। संभव थिक पहिल पृष्ठ रिक्त होअए, जाहिपर किओ ककरहु जन्मकुण्डली टिपि देने अछि, आ' ओहि सान्दर्भिक विवरण लिखि देलक, जे नीक जेकाँ पढ़ब संभव नहि अछि।

विद्यापतिक कृति रहितहुँ 'कीर्तिगाथा' (1402-06 ई.) अद्यावधि अपरिचते रहल। नेपालक एहि पाण्डुलिपिक प्रतिच्छवि पटना कालेजक लाइब्रेरीमे बहुत पूर्वहिसँ अछि। मुदा, अद्यावधि पृथक् रूपेँ ने तँ एकरा प्रकाशमे अनबाक कोनो प्रयास कएल गेल आ' ने एकर विषय-वस्तुक समीक्षा भ' सकल। ओहि ठाम एहि ग्रन्थक जे विवरण देल गेल अछि, से अति भ्रामक अछि। एकरहुँ कीर्तिलते जेकाँ, कीर्तिपताका नाम धराए कीर्तिसिंहक जीवन ओ कालसँ सम्बद्ध कहल गेल अछि (No. 9, Mai 336, Kirtipataka 32 plates) of Vidyapati. Photographic copy from palm leaf Ms. of Darbar Library of Nepal dealing with the praise of the King of Mithila, Kirti Singh,

unpublished. It dates back to 1662 of Vikram Era which corresponds to 1556 A.D.)

पटना कालेजक पुस्तकालयमे कीर्तिगाथाक एकटा आ'र हस्तलेख देवनागरी लिपिमे कागतपर लिखल अछि। संभवतः ई मिथिलामे प्राप्त पाण्डुलिपिक प्रतिलिपि थिक। मुदा एकरहुँ कीर्तिपताकाक नाम धराए कीर्तिसिंहक गौरवगाथे कहल गेल अछि-(No. 3 Kirtipataka of Vidyapati, copied in 1936 from an incomplete MS. found in Mithila. Deals with glories of Kirti Singh, the rule of Mithila in the 14th century, Rare and important.)

उपर्युक्त भ्रातिपूर्ण धारणासँ अनेक पैघ-पैघ विद्वान् ग्रसित रहलाह। कीर्तिलताक संजीवनी व्याख्याकार, पुरातत्त्ववेत्ता डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल एहि प्रसंग लिखैत छथि, "कीर्तिलता ओ कीर्तिपताका, जे अवहट्ठ भाषामे लिखल गेल अछि, कीर्तिसिंहक समयक थिक; पहिलमे युद्धक वर्णन अछि आ' दोसरमे हुनक अन्तःपुरक जीवनक वर्णन अछि।" डॉ. अग्रवालक एहि कथनसँ एक बात अवश्य स्पष्ट भ' जाइछ जे कीर्तिगाथा आ' कीर्तिपताकाक प्रसंग कतेक अज्ञानता रहल छल आ' अछि। वस्तुतः, कीर्तिगाथा आ' कीर्तिपताका, कीर्तिलता जेकाँ महाराज कीर्तिसिंहक जीवनसँ सम्बद्ध नहि अछि। संगहि जकरा डॉ. अग्रवाल कीर्तिपताका बुझैत छथि ओहिमे तीन पोथीक खंडित अंश चिपकल अछि। दू गोट महाकवि विद्यापतिक कीर्तिगाथा आ' कीर्तिपताका आ' एकटा भीषम कविकृत प्रबंधकाव्य। उपर्युक्त तीनू पोथी खंडित अछि तथा कीर्तिगाथाक अर्जुन राए आ' कीर्तिपताकाक शिवसिंह विद्यापतिक अन्यतम संपोषक ओ आश्रयदाता महाराज शिवसिंहसँ नियोजित अछि। मुदा, एतवा तँ सत्य जे एहि हस्तलेखक (पाण्डुलिपिक) अनुशीलनसँ एकटा नब तथ्यपर प्रकाश अवश्य पड़ैत अछि।

कीर्तिगाथाक पाण्डुलिपिक प्रसंग 'पटना कालेज लाइब्रेरीक देवनागरी प्रतिलिपि'क विषयमे चर्च करब सेहो एतय अपेक्षित अछि। पूर्वहि कहल अछि जे कीर्तिगाथा आ' कीर्तिपताकाक एकमात्र उपलब्ध पाण्डुलिपि नेपालक तालपत्र थिक। ई मिथिलासँ प्राप्त कोनो खण्डित पाण्डुलिपिक प्रतिलिपिक थिक; मुदा एहि पाण्डुलिपिक स्रोत कत' आ' कहिआ प्राप्त भेल तकर कोनो प्रमाण उपलब्ध नहि अछि। संभवतः एकर प्रतिलिपि महामहोपाध्याय पं. खुद्दी झाक सुपुत्र पं. बालाकान्त झा द्वारा पटना कालेज लाइब्रेरीमे देल गेल होअए। पूर्वमे पं. खुद्दी झा स्वयं एकर (कीर्तिलता आ' कीर्तिपताका) प्रतिलिपि राजपंडित बलदेव मिश्रकेँ देने छलाह आ' से राज प्रेस, दरभंगासँ मुद्रितो कराओल गेल छल। एखनहुँ पं. सुरेन्द्र झा 'सुमन'क ग्रन्थागारमे संरक्षित अछि। एहि ग्रन्थक अन्तिम भागमे पं. खुद्दी झा लिखैत छथि-

"*आदर्शाशुद्धि दोषेण विपुलाशुद्धि भागिदम्। अलेखि कलिकातायां श्रीखुद्दीशर्मणा विदा ।।*"

एहि ग्रन्थकेँ पं. खुद्दी झा जाहि आदर्श ग्रन्थसँ कलकत्तामे उतारलनि ताहिमे बहुत त्रुटि छल आ' से त्रुटि मुद्रितो प्रतिमे यथावत् रहल। मुदा, कलकत्तामे ओ कोन ग्रन्थसँ उतारलनि ताहि प्रसंग किछु ज्ञात नहि अछि। तथापि म.म. हरप्रसाद शास्त्री द्वारा संपादित 'कीर्तिलता 'क भूमिकासँ एहि विषयक अनुमान लगाओल जा सकैछ।

कीर्तिगाथाक छिट-फुट सम्पादन

वर्तमानमे जे 'कीर्तिपताका' ग्रन्थ सम्पादित भ' उपलब्ध अछि, जकर पहिल भाग पृष्ठ-2 सँ 7 (पृष्ठ-1 छोड़ि) 'कीर्तिगाथा 'क अंश थिक, जकरा पूर्वक विद्वान् लोकनि भ्रमवश कीर्तिपताकाक अंशे बूझि सम्पादित कएलनि। एहि प्रकारेँ अद्यावधि कीर्तिपताका

नामधारी जतेक पोथी सम्पादित भेल अछि ओकर पहिल भाग 'कीर्तिगाथे' थिक। जकर नायक अर्जुन राए छथि आ' कथा घोर शृंगारिक अछि। तेँ एक तरहेँ देखी तँ कीर्तिगाथाक संपादन पूर्वहुँ भेल छल, मुदा से भेल कीर्तिपताकाक संगहि आ' ओकरहि नाम धराए। 'कीर्तिगाथाक' संपादन कार्य पूर्वमे डॉ. उमेश मिश्र, डॉ. जयकान्त मिश्र (1960 ई.), डॉ. वीरेन्द्र श्रीवास्तव (1973 ई.), पं. गोविन्द झा, डॉ. शशिनाथ झा (1992 ई.), डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा (1999 ई.) तथा शशिनाथ झा (2020 ई.) आदि कएने छथि।

'कीर्तिगाथा'क हस्तलेखक सम्पादन कार्यकेँ पं. खुद्दी झा प्रारम्भ कएने छलाह, मुदा अपन पाठोद्धारसँ ओ स्वयं संतुष्ट नहि छलाह, तेँ ओकर प्रकाशन नहि भ' सकल। एहि ग्रन्थक प्रथम प्रकाशन डॉ. उमेश मिश्र आ' डा.जयकान्त मिश्रक सम्पादकत्वमे अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, इलाहाबादसँ 1960 ई. मे भेल छल। मुदा, अपटु प्रतिलिपिकारसँ प्राप्त ग्रन्थ रहबाक कारणेँ एकर पाठ विकृत रहि गेल। डॉ. वीरेन्द्र श्रीवास्तव सन् 1973 मे एकर तालपत्र 1 सँ 7 (जे मूल 'कीर्तिगाथा' थिक, पहिल तालपत्रकेँ छोड़ि) धरिक पाठोद्धारक प्रयास कएलनि; मुदा, एहूमे बहुत अंश धरि त्रुटि रहि गेल। 1987 ई. मे मिथिला मनीषी पं. गोविन्द झाक सहयोगीक रूपमे डॉ. शशिनाथ झा एकर पाठोद्धारक प्रयास कएलनि जकर मूल तालपत्र ग्रन्थक छायाप्रति दू स्थानमे छल-पहिल विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, दरभंगामे जकर संरक्षक तत्कालीन विभागाध्यक्ष डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा रहथि आ' ओ एकर सम्पादनक भार स्वयं उठओने छलाह। दोसर, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटनामे; जकर हस्तलेखक देख-रेखकर्ता प्रभारी पं. हेमचन्द्र रहथि। एही पाण्डुलपिक आधारपर डॉ. शशिनाथ झाक सहयोगेँ पंडित गोविन्द झाक सम्पादकत्वमे सन् 1992मे, नाग प्रकाशक, जवाहर नगर, दिल्ली-7 सँ प्रकाशित भेल अछि।

कीर्तिलता, कीर्तिगाथा आ' कीर्तिपताका'क मूल पाण्डुलिपि प्राप्त करबासँ पूर्व म.म. हरप्रसाद शास्त्री तीनू ग्रन्थक प्रतिलिपि करबओने छलाह। संभव थिक जे पं. खुद्दी झा एही प्रतिलिपिक उपयोग कए 'आदर्श ग्रन्थ' कहने होथि। पं. खुद्दी झाक कर्मक्षेत्र कलकत्ता छलनि। जखन कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिलीक पढ़ौनी प्रारंभ भेल तँ ओ ओतए आद्य प्राध्यापक भेलाह। हुनक ख्याति ओतए प्राचीन विद्वानक रूपमे छल। सम्भवतः इएह कारण रहल होयत तेँ म.म. हरप्रसाद शास्त्रीक निकट सम्बम्ध रहल होअए। अपटु लिपिकार जनिका तिरहुता पढबामे असौकर्य होइत छलनि, ई तनिक लेखाशुद्धि छल, तकरा शुद्ध बिनु कएनहि ओ छपबाक लेल तँ द' देलथि; मुदा, संभवतः पश्चात् वितरण करब उचित नहि बुझने होथि। जँ म.म. शास्त्रीकेँ मूल भेटल रहैत, जे ओ अपन दोसर खेपक यात्रामे नेपालसँ अनने छलाह तँ हुनका सदृश विद्वानक लेल प्रतिलिपि करबामे लेखाशुद्धिक कोना रहैत? पटना कालेजक देवनागरी प्रतिलिपि प्रायः एही प्रतिलिपिक थिक। एकर मूल पाण्डुलिपि वएह थिक जे नेपालक दरबारसँ स्थानान्तरित क' सम्प्रति नेपालक राष्ट्रीय अभिलेखागारमे उपलब्ध अछि।स्पष्टतः कहल जा सकैछ जे विद्यापतिकृत कीर्तिगाथाक एकमात्र प्रति मिथिलाक्षरमे लिखित तालपत्र नेपालक राजकीय हस्तलेखागारमे अछि। ओना पटना विश्वविद्यालयक देवनागरीप्रति अपूर्ण अछि, कारण मूल पाण्डुलिपि स्वतः खण्डित अछि, अन्य अशुद्धिक अतिरिक्त एहिमे कोनो अन्तर नहि अछि।

पश्चात् डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा द्वारा संपादित, व्याख्यायित कीर्तिलता नामे 1998-99 ई. मे साहित्य अकादेमी दिल्लीसँ प्रकाशित भेल। ओना तँ एहि पोथीक नाम ओ कीर्तिपताका देलनि मुदा एकरा दू भागमे बाँटि पूर्वांश (कीर्तिगाथा) आ' उत्तरांश

(कीर्तिपताका) नामे विभाजित कएने छथि। सन् 2020 ई.मे 'कीर्तिगाथा' नामक पहिल बेरि प्रयोग करैत पं. शशिनाथ झा ई-बुकक रूप ब्राह्मी प्रकाशनसँ प्रकाशित करबाए पाठककेँ प्रस्तुत कएलनि, मुदा, एकरहुँ ओ स्वतंत्र रूपेँ नहि, अपितु 'कीर्तिगाथा' आ' 'कीर्तिपताका' सएह नाम धरओलनि।

'कीर्तिगाथा' नामसँ पृथक् रूपेँ मात्र डॉ. शशिनाथ झा द्वारा पहिल बेर एहि पोथीक चर्च भेल, मुदा पूर्वमे डॉ. जयकान्त मिश्र अपन मैथिली साहित्यक इतिहासमे, अचार्य रमानाथ झा 'मिथिला मिहिर', विद्यापति स्मृति अंक 1971 ई.मे तथा पं. गोविन्द झा अपन 'कीर्तिपताका' (1992 ई.) मे एहि बातक संकेत देने छलाह जे प्रकाशित 'कीर्तिपताका 'क पोथीमे संभवतः विद्यापतिकृत दू गोट पोथीक खंडित अंश अछि।

कीर्तिगाथाक विषय-वस्तु

'कीर्तिगाथा' (1402-05 ई.) महाकविक दोसर रचना थिकनि मुदा पूर्वमे हिनक अवहट्ठक दू गोट ग्रन्थ 'कीर्तिलता' (1402-05 ई.) तथा 'कीर्तिपताका' (1414 ई.) नामे प्रकाशित भ' चुकल अछि। तेँ 'कीर्तिगाथा'केँ तेसर ग्रन्थ मानब सएह उचित हएत। एकर पाण्डुलिपिक प्रतिलिपि 'कीर्तिपताका 'क संगहि प्राप्त भेल छल। बहुतो दिन धरि एकरा 'कीर्तिपताका 'क अंशे बुझल जाइत रहल; मुदा, पं. शशिनाथ झाक गहन शोधसँ आब ई प्रमाणित भ' चुकल अछि जे दुनू पृथक् पृथक् पोथीक अंश थिक। उपलब्ध मात्रिकाक पृष्ठ 2 सँ 7 धरि 'कीर्तिगाथा'क अंश थिक जाहिमे अध्याय अंकित नहि अछि। संभव थिक जे प्रतिलपिकार द्वारा लिखब छूटि गेल होअए। ओना अपन विषय-वस्तुक कारणेँ 'कीर्तिगाथा"क अध्यायक नाम 'विलास' कहब उचित बुझाइत अछि; जेना, 'कीर्तिलता'केँ 'पल्लव' आ' 'कीर्तिपताका 'केँ 'उल्लास 'मे विभक्त कएल गेल अछि। चूकि 'कीर्तिगाथा' शृंगारप्रधान रचना थिक जाहिमे नायक (कृष्ण) आ' नायिका (राधा)क केलिक्रीडाक विवरण महाकवि प्रस्तुत कएने छथि; एहि ग्रन्थक 'हरिकेलि' अथवा 'हरिविलास' शीर्षक नाम धराएब सेहो उचित बुझाइत अछि।

'कीर्तिगाथा ' दू 'विलास' (अध्याय) मे बाँटल गेल अछि। पहिल 'विलास 'मे गणेश वंदना, राजधर्म, राजदरबार, प्रजागणक आर्थिक स्थित आ' अर्जुन राएक यशोगानक वर्णन भेल अछि तथा दोसर 'विलास 'मे घोर शृंगाररस (प्रीतिरस) केँ राखल गेल अछि, एहिमे नायक नायिकाक परस्पर प्रेम, नायिकाक भाव-भंगिमा, मान, मिलन अभिसार, रूप सौन्दर्य, केलिक्रीडा, नायिकक विभिन्न प्रभेद तथा उत्कट प्रेमलीलाकेँ चित्रांकित कएल गेल अछि। एहिसँ आगाँ पोथी खण्डित अछि।

प्रस्तुत कीर्तिगाथामे कुल उपलब्ध पदक संख्या 42 अछि। प्रारंभिक अंश खंडित अछि आ' एकर सुरूहक अंशक प्रसंग ज्ञात नहि अछि, मात्र एतबे भेटैछ- "... सदानन्दकन्दोऽयमिन्दुः" (डॉ० शशिनाथ झा) आ' "तद्दकद्द मानन्दकन्दोयमिन्दु" (डॉ० वीरेन्द्र श्रीवास्तव)। अर्थात् आनन्दक मूल ई चन्द्रमा छथि। पश्चात् एकर उपस्थापन गणेश वन्दनासँ होइत अछि। गणेशकेँ प्रणाम करैत अर्जुन राएक यशोगान कएल गेल अछि। एकरा बाद विद्यापति कीर्तिगाथाक प्रसंग अपन कामना व्यक्त करैत छथि जे हुनक ई वाणी सज्जनक कण्ठमे बसि देश-देशान्तरमे पसरि शृंगार आदि रसक वर्षा करत। आगाँक पदमे विद्यापति अपनाकेँ 'नवजयदेव कवि विद्यापति' कहैत त्रिपुर सिंहक पुत्र अर्जुन राएकेँ तात्कालीन राजासभसँ श्रेष्ठ मानैत छथि। हुनक वीरता देवराज इन्द्रक समतुल्य छनि। पुनः कवि राजधर्मक पाठ पढ़बैत छथि जे एकटा राजाकेँ राजधर्मक पालन कोन रूपेँ करबाक थिकनि। राजा अर्जुन राए अति गुणी, दानवीर, नीक-अधलाह आ'

योग्य-अयोग्य पारखी, सर्वश्रेष्ठ दानी आ' धर्मात्मा छथि, जनिका लग पाप स्पर्शो नहि क' सकैछ। हुनक राज्यमे धर्मक मोताबिक लोक व्यवहार करैत अछि तेँ सुखी अछि। ओ शत्रुक विनाशक छथि। पुनः हुनक दरबारक विवरण कएल गेल अछि। अर्जुन राएक सभामंडपमे, घनेरो लोकक उपस्थितिमे, एकटा सिद्ध-पुरुष शृंगार-रसक उल्लेख करबाक प्रस्ताव रखैत छथि। ओ सिद्ध-पुरुष अर्जुन राएक तुलना हरिश्चन्द्र आ' राघव राम राजासँ करैत छथि। ओ कृष्णक गोपीलोकनिक संग कएल केलिक्रीडा (हरिकेलि) क बखान करैत छथि।

एकर पश्चात् अर्जुन राएक यशोगान कवि करैत छथि आ' अपन स्वाभिमान व्यक्त करैत छथि जे जहिना ओ कविमे श्रेष्ठ 'नवजयदेव' छथि, तहिना हुनक ई विरुद काव्यमे श्रेष्ठ अछि। अर्जुन राए धर्मात्मा, विवेकवान्, संसारमे देव-स्वरूप आ' सर्वविध युद्ध-कौशलमे प्रवीण छथि। पश्चात् जगतसिंह (अर्जुन राएक नामान्तर) क प्रशंसा कएल गेल अछि जे अपन शत्रु राजालोकनिक मध्य त्रैलोक्यवली छथि। पुनः अर्जुन राएक गुणगान करैत हुनक पराक्रम आ' कर्तव्यपरायणताक बखान कएल गेल अछि-कोना अहल-भोरे उठि ओ आतुरतापूर्वक ईश्वरक आराधना करैत छथि आ' कोना अपन सेनाक प्रत्येक अंगक निरीक्षण करैत छथि। महाकविक धारणा छनि जे सत्पात्रकेँ ई विषय अति प्रिय होइछ, कारण एही विषयपर विद्यापति एकटा सम्पूर्ण ग्रन्थ 'पुरुष परीक्षा' लिखने छथि। प्रायः राजदरबारक हेतु राजाकेँ एहि विषयक ज्ञान हएब परमावश्यक होइछ। इएह कवि बुझलनि आ' बुझबए चाहैत छथि। राजाक आचरणक प्रसंग कवि लिखैत छथि-

"*धम्म देखि बेवहार लोक नहि लहइ पराभव।*
सब काँ घर उच्छाह पलटि जनि जम्मिअ राहब ।।
दाने दलिअ दारिद्द, खग्गे परिपन्थी खण्डिअ।
वीरज्जुन-राज बेराज भउ, तिरहुति मज्जादा बहि रहिआ। करि तुरअ पअमार भरे, कुरुम कोर कसमसि सहिअ।।"

पश्चात् महाकवि विद्यापति अपन अवहट्ठ कृति 'कीर्तिगाथा 'मे 'तिरहुत' आ' ओकर राजालोकनिक यशोगान करैत छथि। कवि राजाक दू गोट कृत्यक वर्णन करैत छथि जे कामकेलि आ' युद्धकला दुनूमे प्रवीण होथि, ओएह पुरुष राजाक कीर्ति पाबि सकैछ। एहि ठाम कवि कृष्णावतारक रहस्य विस्तारपूर्वक वर्णन कएने छथि। राजा रामचन्द्र सीता वियोगक कारण कामभोगसँ वंचित रहि गेलाह, तेँ ओ पुनः कृष्णक रूपमे अवतार लेलनि जाहिसँ अनेक विधि-रतिक्रीड़ाक सुख प्राप्त क' आदर्श राजाक कामोपभोगात्मक कृत्य पूरा क' सकथि। तदुपरान्त अवहट्ठमे काम-केलिक विस्तृत वर्णन भेल अछि, जाहिसँ कृष्ण जीवन-साफल्य पओलनि। उपर्युक्त तथ्यक वर्णन 'कीर्तिगाथा 'क श्लोक संख्या-13 'मे उद्धृत अछि, जे संस्कृतक 'स्रग्धरा छन्द' थिक।

"*सीता-विश्लेषदुःखादिव रघुतनयो लब्धकृष्णावतारः*
पूर्व कृष्णो यथाभूदरिकुल दमनः साम्प्रतं तादृशस्त्वं ।।
तस्माद् भूपालमौले ! सुखमपि सुतादेव देवानुभूयाः
संसारे भोगसारे स्फुटमवनिभुजां श्रीफलं वा किमन्यत्।।"

एकर पश्चात् समस्त 'कीर्तिगाथा 'मे प्रीतिरस भरल अछि।पोथीक शृंगारिक पदसभमे प्रेम आ' रूप-सौन्दर्यक पराकाष्ठा, नायिकाक समस्त भेदोपभेदक वर्णन भेल अछि। सभ प्रकारक सम्भोग, केलिक वर्णन विस्तारपूर्वक कएल गेल अछि। द्रष्टव्य अछि-

"*ताहि नागरिन्हि करो सङ्ग ।। दए सम्भोग आनन आनन्द । जनि कुमुदनि मेखला बाज। नृत्य गीत कुतूहले छाज।"*

'कीर्तिगाथा 'मे वर्णित रसरंग प्रायः ओहने अछि जेहन विद्यापति अपन शृंगार गीतसभमे आ' 'गोरक्षविजय'क थोड़े'क गीतसभमे चित्रित कएने छथि। तेँ इहो तथ्य प्रमाणित करैत अछि जे 'कीर्तिगाथा' निश्चित रूपेँ महाकवि विद्यापतिएक रचना थिक। 'कीर्तिगाथा 'मे कृष्णक चरित्रकेँ ताहि रूपेँ चित्रित कएल गेल अछि जाहिसँ ई प्रतीत होइछ जे ओ भगवान् नहि, कोनो साधारण मनुक्ख होथि।

निष्कर्षतः समस्त 'कीर्तिगाथा 'क कथा-वस्तुक सार इएह अछि जे गणेश-स्तुतिक पश्चात् विषय प्रस्ताव अछि, जाहिमे अर्जुन राएक गाथा-गाने 'क चरचा अछि। एकरा बाद शृंगार-रस आ' कथानायक जगत सिंहक उल्लेख भेल अछि। ई जगत सिंह आ' जगत खाण अर्जुने राएक नामान्तर थिक, जाहि प्रसंग प्रो. रमानाथ झा 'मिथिला मिहिर 'क विद्यापति स्मृति अंक 1971 मे स्पष्ट कएने छथि। शृंगार-रसक प्रारम्भ ओहिठामसँ होइत अछि जखन अर्जुन रायक सभामे एकटा सिद्ध-पुरुष अबैत छथि आ' शृंगार-रसक वर्णनक प्रस्ताव दैत छथि तथा गोपीलोकनिक संग कृष्णक विलासक वर्णन करैत छथि।

कीर्तिगाथा: एक स्वतंत्र कृति

'कीर्तिगाथा 'क पाण्डुलिपि खंडित अछि। सभसँ पैघ विडम्बना ई अछि जे अद्यावधि प्रकाशित 'कीर्तिपताका' (1414 ई.) नामसँ उपलब्ध ग्रन्थमे एकर उपक्रम आ' उपसंहारमे संगतिक अभाव अछि। 'कीर्तिपताका 'क आरम्भिक सातो तालपत्र आ' अन्तक 'नओ' तालपत्र कोनो एक कृतिक अंश नहि; अपितु दूटा स्वतंत्र पोथीक अवशेष थिक। सर्वप्रथम प्रो. रमानाथ झा एहि खण्डित पाण्डुलिपिमे दूटा स्वतंत्र मुदा दुनू खण्डित कृतिक संकेत देलन्हि। पश्चात् डॉ. वीरेन्द्र श्रीवास्तव, डॉ. जयकान्त मिश्र, पं. गोविन्द झा तथा प्रो. शशिनाथ झा आदि विद्वान् लोकनि विस्तारपूर्वक विचार करैत एहि दिशामे सभक ध्यान आकृष्ट करबओलनि। अद्यावधि प्रकाशित 'कीर्तिपताका 'क पात एकसँ सात धरि (पहिल पात छोड़ि जे भीषम कविक कृति थिक) 'कीर्तिगाथा 'क कथा वर्णित अछि। एकर पहिल पात आ' सातम पातक आगाँक अंश खंडित अछि। प्रकाशित 'कीर्तिपताका'सभमे खण्डित 22 पातक पश्चात् 30 सँ 38 पात धरि 'कीर्तिपताका 'क कथा वर्णित अछि। 'कीर्तिपता' आ' 'कीर्तिगाथा' दुनू पृथक्-पृथक् ग्रन्थ थिक, तकर निम्न कारण अछि -

(1) *प्रकाशित 'कीर्तिपताका' पृष्ठ 2 सँ सात धरिक कथा-नायक अर्जुन सिंह (अर्जुन राए वा अर्जुन खाण, एही अर्जुन सिंहक नामान्तर थिक) छथि, जखन कि 'कीर्तिपताका 'क कथा-नायक शिवसिंह छथि।*

(2) ने तँ 'कीर्तिगाथा'क कथा-नायक अर्जुन सिंहक चर्च 'कीर्तिपताका 'क कथामे कतहुँ आयल अछि आ' ने 'कीर्तिपताका 'क कथा-नायक शिवसिंहक चर्च 'कीर्तिगाथा 'क कथामे कतहु भेटैत अछि।

(3)कीर्तिगाथाक कथा घोर शृंगारिक अछि, जखन कि कीर्तिपताकाक कथामे युद्ध आ' शिवसिंहक यशोगान कएल गेल अछि।

(4) कीर्तिगाथाक कथा कोना शृंगारसँ युद्धपर पहुँचि गेल तकर विवरण नहि प्राप्त अछि।

निष्कर्षतः दुनू पाण्डुलिपिक कथा-नायक, कथानक तथा परस्पर दुनू पोथी 'कीर्तिगाथा' आ' 'कीर्तिपताका 'क कथा-वस्तुमे तारतम्य नहि वैसब आदि सिद्ध करैछ जे दुनू पृथक् पृथक् पोथीक खंडित अंश थिक। तेँ अद्यावधि प्रकाशित 'कीर्तिपताका 'मे तीन पोथीक खंडित अंश गुंफित अछि-पहिल पात सं. 1, भीषम कविकृत, दोसर पात संख्या 2 सँ सात धरि 'कीर्तिगाथा 'क अंश तथा तेसर पात संख्या 30-38 धरि

कीर्तिपताका 'क अंश थिक। पात संख्या 8 सँ 29 धरि (22 पृष्ठ) खण्डित आ' अनुपलब्ध अछि।

कीर्तिगाथा नामकरणक औचित्य

'कीर्तिगाथा 'क असल नामक विषयमे निश्चित रूपेँ किछु कहब कठिन अछि; मुदा विद्यापति एहि ग्रन्थक कोनो ने कोनो नाम अवश्य देने होएताह। जयदेव अपन प्रबंधक नाम 'श्रीवासुदेव रति केलि कथा' रखलनि। नव जयदेव सेहो शृंगाररसमे अनुरक्त गोपीसभक लेल अपना रचनाकेँ 'हरिकेलि' कहैत छथि। एही सूत्रकेँ पकड़ि डॉ. वीरेन्द्र श्रीवास्तव एहि पोथीक नाम 'हरिकेलि' होएबाक संभावना व्यक्त कएने छथि। मुदा, जाहि रूपेँ जयदेव 'श्रीवासुदेव रति केलि तथा समेत' लिखियो कैँ अपन पोथीकेँ 'गीतगोविन्द' कहैत छथि तहिना विद्यापति 'हरिकेलि'क गान करितहुँ पोथीकेँ कोनो भिन्न नामकरण कएने होएताह आ' से नाम 'कीर्तिलता' आ' 'कीर्तिपताका' जेकाँ 'कीर्ति' शब्दसँ प्रारंभ होमय बला होयत। अर्जुन राएकेँ सेहो कीर्तिसिंह आ' शिवसिंहहि जेकाँ तिरहुतक राजा कहल गेल छलनि। संभवतः महाकवि विद्यापति अपन तीनू पोषकक नामपर एक-एकटा काव्य-ग्रन्थक रचना कएलनि। तेँ संभव जे जहिना कीर्तिसिंहक लेल कीर्तिलता पल्लवित कएलनि, शिवसिंहक लेल 'कीर्तिपताका' उल्लसित कएलनि, तहिना अर्जुन राएक लेल जाहि ग्रन्थक रचना कएलनि ओकर शीर्षक प्रायः 'कीर्तिगाथा' (हरिकेलि) कैँ विभिन्न 'विलास' (अध्याय) मे बँटने होइथि। एहि तथ्यक आभास हुनक पद "पणवओ गणवइ आवओँ गाँहा" सँ सएह प्रतीत होइछ। एतए 'गाहा' शब्दक पर्याय स्पष्टतः 'गाथा' थिक।

कीर्तिगाथाक महत्व आ' वैशिष्ट्य

नव जयदेवकृत 'कीर्तिगाथा 'मे मैथिली भाषा-साहित्यक आदिकालीन किछु निदर्श भेटैत अछि। एहि पोथीमे 'वर्णरत्नाकर' जेकाँ सूची आ' वर्णना (citation) नहि अछि, प्रत्युत संतुलित वाक्यमे भावक निरवच्छिन्न प्रवाह अवश्य भेटेछ। अनुप्रास-यमकादिक अलंकारक संगहि एहिमे रूपक आ' उपमा अलंकार सेहो खूब निखरल आ' हृदयग्राही अछि। विद्यापतिक प्रसंग प्रसिद्ध भारतीय विद्वान् काशीप्रसाद जायसवालक कहब छनि-"विद्यापतिक वर्णन अद्भुतताक समिश्रणसँ रहित अछि अर्थात् ओ अतिरंजित नहि अछि। तेँ ई काव्यसँ बेसी इतिहास कहाए सकैत अछि।" (जर्नल ऑफ बिहार-उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी, XIXI, 3-4, पृ.-298, हरप्रसाद शास्त्री द्वारा संपादित 'कीर्तिलता 'क समीक्षा)। कवि वर्णन द्वारा पाठककेँ सोझे अर्जुन राएक सभाभवन पहुँचाए दैत छथि आ' पश्चात् पाठककेँ शृंगाररससँ सराबोर कथाक विन्यास तेना ने करैत छथि जे पठाक एके बैसकीमे सम्स्त पद पढबाक लेल विवश भ' जाइत अछि।

भाषावैज्ञानिक विश्लेषण

एहि ग्रन्थक मूल भाषा मुख्य रूपेँ अवहट्ठ (मिथिलाक अपभ्रंश) धिक, मुदा एहिमे संस्कृत, प्राकृत आ' मैथिली भाषाक प्रयोग सेहो भेल अछि। 'कीर्तिगाथा 'मे अवहट्ठक बीच थोड़े 'क फारसी शब्दक प्रयोग सेहो भेल अछि, मुदा बेसी प्रयोग 'कीर्तिलता' आ' 'कीर्तिपताका 'मे भेटैत अछि, जतए यवनसभक वर्णन आएल अछि। 'कीर्तिगाथा'क बीचमे अनुच्छेद संख्या 1, 2 आ' 3, 15 सँ 18 तथा 32, 33 संस्कृतमे अछि, ताहूमे अनुच्छेद 15 आ' 33 सुललित प्रवाहमय लच्छादार गद्य अछि। 'कीर्तिगाथा 'मे कुल पदक संख्या 42 अछि आ' एकर अंतिम पद खंडित रूपेँ तोटक छन्दमे उपलब्ध अछि;

जाहिमे डराएलि मुग्धा नायिका, जे कामकेलि क्रीडासँ पूर्णतः अनभिज्ञ छथि, आ' युवावस्थासँ उन्मत्त कामक्रीडामे निपुण नायक... एहि दुनूक अनमेल समागमपर कवि प्रश्न ठाढ़ करैत छथि। ई एहि तथ्यकेँ सिद्ध करैत अछि जे विद्यापतिक समयमे अनमेल विवाह समाजमे प्रचलित छल। एहिसँ आगाँक शेष अंश खण्डित अछि। 'कीर्तिगाथा 'क अनुच्छेद संख्या 4, 19 आ' 20 प्राकृतमे अछि तथा अनुच्छेद संख्या 10, 29आ' 30 मैथिलीमे अछि, शेष अंश अवहट्ठमे अछि। ज्ञातव्य जे जखन भारतक अन्य प्रान्त आ' पश्चिमी क्षेत्रमे प्राकृतक पश्चात् अपभ्रंशक प्रचलन भेल, ओही समय मिथिलामे प्राकृतक बाद सोझे अवहट्ठक युग आबि गेल। अर्थात् 'अवहट्ठ' मिथिलाक अपभ्रंशे 'क नाम थिक। एकर प्रयोग 'डाक' (8म शताब्दी) क प्राचीन स्रोतसँ प्राप्त वचनसभमे भेल अछि, जखन कि अवहट्ठ नामक सर्वप्रथम उल्लेख 10म शताब्दीक मैथिल विद्वान् पहराज अपन पोथी 'पाउअकोस 'मे कएने छलाह आ' चौदहम शताब्दीक तेसर दशकमे कविशेखर ज्योतिरीश्वर 'वर्णरत्नाकर' (1324 ई.) मे संस्कृत प्राकृतक बाद अवहट्ठे 'क उल्लेख कएने छथि। अवहट्ठक किछु उदाहरण 'वर्णरत्नाकर 'मे सेहो देखल जा सकैछ जखन कि एकर मानक प्रयोग विद्यापतिकृत अवहट्ठक पोथी-'कीर्तिलता', 'कीर्तिपताका' आ' 'कीर्तिगाथा 'मे देखल जा सकैछ। पश्चात् उमापतिक 'पारिजातहरण' (1625 ई.), रामदासझाकृत 'आनन्द विजय (1640 ई.), देवानन्दकृत 'उषाहरण' (1640 ई.), रमापतिकृत 'रुक्मिणीपरिणय (1750 ई.) आदि ग्रन्थसभमे एक-दूटा गीत अवहट्ठ भाषाक प्राप्त होइछ।

विद्यापतिक 'कीर्तिगाथा' जयदेवक 'गीतगोविन्द' जेकाँ गीत-प्रबन्धक उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि। एहिमे जे संस्कृत गद्यक प्रयोग भेल अछि ओ गद्यांश गीते'क भाव-विस्तार दैत अछि। एहिना एकर गीतसभ 'गीतगोविन्द' जेकाँ रागबद्ध नहि अपितु छन्दमे अनुबद्ध अछि। यद्यपि एकठाम दोहा आ' कतोक ठाम मात्र 'छन्दः' लिखि देबाक अतिरिक्त कोनो छन्दक निर्देश नहि कएल गेल अछि तथापि एहिमे 'रड्डा' आ' 'छप्पय' केर बेसी प्रयोग भेल अछि। प्रायः ई दुनू छन्द कविकेँ अतिशय प्रिय छल, कारण 'कीर्तिलता 'मे सेहो एकरहि प्रधानता अछि। अन्यान्य प्रयुक्त छन्दमे आर्या, अरिल्ल, चौपाइ, षट्पद, मालिनी, पञ्चचामर, हरिगीतिका, जयकरी, तोटक आदि अछि। एहि छन्दसभक निर्देश डॉ. वीरेन्द्र श्रीवास्तव अपन निबंधमे तथा डॉ. शशिनाथ झा अपन संपादित पोथी 'कीर्तिगाथा आ' कीर्तिपताका' (2020 ई.) मे कएने छथि। संस्कृत श्लोकसभ स्रग्धरा, (श्लोक संख्या-13), उपजाति (श्लोक सं.-14), अनुष्टुप (श्लोक सं.-3 आ' 30) तथा आर्या (श्लोक संख्या-2) छंदमे कएने छथि।

'कीर्तिगाथा'क महत्त्व अछि अवहट्ठ भाषाक दृष्टिएँ तथा तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक अवस्थाक विशद चित्रणक दृष्टिएँ। मिथिलीमे अपभ्रंश साहित्य विशेष उपलब्ध नहि अछि। ओना अनुपलब्धताक प्रश्नपर पाछाँ विचार कएल गेल अछि। हमरालोकनिकेँ जे भेटि रहल अछि ताहिमे 'कीर्तिगाथा 'क महत्त्व आधुनिक मैथिली भाषा-विकासक अध्ययनक दृष्टिएँ पर्याप्त अछि। विद्यापतिक मैथिली 'पदावली 'क भाषासँ पूर्वक भाषाक की स्थिति छल तकर अनुमानक लेल 'सिद्धसाहित्य' (बौद्धगान) आ' 'प्राकृतपैंगलम् 'क पश्चात् एकरे भाषा अछि। विद्यापति एहि अवहट्ठ भाषाकेँ 'देसिल बयना' कहलनि; मुदा, हुनक युगक 'देसिल बयना 'क भाषा तँ हुनका गीतमे भेटैछ। 'कीर्तिगाथा', 'कीर्तिलता' तथा 'कीर्तिपताका 'क भाषा तँ हुनकासँ पूर्वक 'देसिल बयना' थिक आ' ई तँ वर्णरत्नाकरहुँसँ पूर्वक भाषा थिक। 'प्राकृतपैंगलम्'क भाषासँ एकर भाषा बेसी साम्य रखैत अछि। किछु विद्वानक अभिमत छनि जे ई

'मिथिलापभ्रंश' भाषा थिक, जकरापर शौरसेनी अपभ्रंशक प्रभाव स्पष्ट देखाइत अछि। भाषाक दृष्टिएँ समग्रत: ई काव्य मैथिलीमे नहिओ रचित रहि मैथिली काव्य जगतक अनुपम निधि थिक। 'कीर्तिगाथा 'क भाषामे प्राचीन मैथिली भाषाक निम्नलिखित वैशिष्ट्य दृष्टिगत होइत अछि।

(1) 'कीर्तिगाथा', 'कीर्तिलता' आ' 'कीर्तिपताका 'क भाषामे विशेषण आ' क्रियामे स्त्रीलिंगक व्यवहार स्त्रीलिंग संज्ञाक हेतु होइछ। (2) एहि पोथीसभक भाषामे, बहुवचनमे, 'न्हीं', 'न्ह', 'आ', 'या' आदिक व्यवहार भेटैछ। (3) एहिमे विभक्ति चिह्नक व्यवहार प्राय: नहि दृष्टिगत होइछ। (4) एहिमे परसर्गक अभाव आओर कारकमे 'ए', 'जे'क प्रयोग भेटैछ। (5) 'कीर्तिगाथा' एवं अन्य विद्यापतिक अवहट्ठ रचनामे तृतीया विभक्तिमे 'स', 'ही', पंचमीमे 'तह', षष्ठीमे 'करि', 'करो' 'कर' तथा 'करेओ' आओर सप्तमी विभक्तिमे 'ही'क प्रयोग भेटैछ। (6) समविभक्तिक हेतु चन्द्रबिन्दु (ँ)क व्यवहार होइछ। (7) वर्तमानकालक उत्तमपुरुषमे 'ओ', 'ओ', 'मध्यमपुरुषमे 'इ', 'ए' तथा 'यि'क प्रयोग भेटैछ। (8) भूतकालमे 'इअ' तथा भविष्यत् कालमे 'इह'क प्रयोग भेल अछि। (9) पूर्वकालिक हेतु 'इ', 'ए' व्यवहृत होइछ। (10) विधि-क्रियामे 'उ', 'ऊँ', 'ह'क व्यवहार होइत अछि। (11) कृदन्त हेतु 'न्ते' तथा 'न्ता'क प्रयोग होड अछि। 'कीर्तिगाथा 'क भाषामे स्वरक सानुनासिकीकरण भेटैत अछि।

14म सदी धरि समस्त उत्तरी भारतमे आधुनिक आर्यभाषा बाजल जाइत छल। संस्कृत आ' प्राकृतक प्रभुत्व कविताक क्षेत्रसँ हटि रहल छल। विद्यापति (1350-1450 ई.) सँ पाँच सए वर्ष पूर्व 'कर्पूरमंजरी 'क रचयिता 'राजशेखर 'कैं संस्कृत प्रबंध-पुरुष बूझि पड़लनि, तैं 'कपूरमंजरी 'क रचना ओ प्राकृतमे कएलनि। मुदा, विद्यापतिकैं ओएह प्राकृत नीरस बूझि पड़लनि आ' संस्कृत जनसामान्यक लेल अबोधगम्य भ' गेल छल। तँ ओ देशी भाषा अपभ्रंशमे अपन अवहट्ठ ग्रन्थसभक रचना कएलनि। विद्यापति अपन काव्य जनता जनार्दनक हेतु लिखलनि। सर्वसाधारणक हेतु अपन अमर कीर्ति- 'कीर्तिलता' (1402-05), 'कीर्तिगाथा' (1402-05) तथा 'कीर्तिपताका' (1406-14) लिखलनि आ' तैं 'देसिल बयना 'मे लिखलनि। पूर्ववर्ती साहित्यकारलोकनिक सदृश अपन राजाक विरुदावली गबैत काल विद्यापति देश-कालकँ नहि बिसरि गेल छलाह। ओ जनभाषाकैं महत्त्व देलनि। इएह कारण अछि जे विद्यापतिक अपभ्रंश-कृति, पूर्वक भाषा रहनहुँ तत्कालीन जनभाषाक 'डिम्ब' छोड़ैत रहल। डॉ. रामबाबू सक्सेना आ' शिवनन्दन ठाकुर 'कीर्तिलता', 'कीर्तिगाथा' आ' 'कीर्तिपताका 'क भाषाकैं 'मिथिलापभ्रंश' कहलनि अछि। हिन्दी साहित्यक प्रसिद्ध आलोचक डॉ. नामवर सिंह एहि अवहट्ठ पोथीसभक भाषाक विषयमे लिखैत छथि जे-"विद्यपतिक अवहट्ठ भाषासभमे मैथिलीक प्रारंभिक डिम्ब भेटैत अछि।" (हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग, डॉ. नामवर सिंह, प्रथम संस्करण, पृ.-58-59)। 'कीर्तिगाथा' वा अन्य विद्यापतिक अवहट्ठ रचनासभमे ज्योतिरीश्वर (1280 ई.) कृत 'वर्णरत्नाकर' (1324 ई.) क अनेक शब्द ओही संदर्भमे प्रयुक्त भेल अछि; जेना अओकी, अक्खउरि, अगहरिया, अत्यान, कुमर, खाति, चउदन्त, चन्देल, चाहुआन, चोरगाह, नागढ़ि (नागरि), पसाहि, पाइक, पखार, बउराअ (बउरिआ), विबन्ध, भण्डारि, मल्ल, मंहथ, मान, मुदहथ, रट्ठठर, राउत्त, राउतपति, राजवल्लभ, साचार, सुरवए, सुरुकि, सव्वा-अओसर (सर्वावसर) आदि। एहिना 'कीर्तिगाथा 'मे 'वर्णरत्नाकर 'क आ' 'कीर्तिलता' एवं 'कीर्तिपताका 'क किछु पाँती सेहो समान रूपें बहुलांश प्रतीत होइछ। 'कीर्तिगाथा 'मे अनेक वीरयोद्धा, विद्वान्, विभिन्न प्रकारक नायिका, शृंगाररसक बहुलता

इत्यादिक उल्लेख भेटैत अछि जाहिसँ एहि काव्यक ऐतिहासिकता स्वयं सिद्ध भ' जाइछ।

कीर्तिगाथाक नायक अर्जुन राए

अर्जुन राए कीर्तिगाथाक नायक छथि।

ओइनवार वंशक ब्राह्मण राजपण्डित कामेश्वर ठाकुर 1340 ई. मे मिथिलाक शासक नियुक्त कएल गेलाह। हुनक स्वर्गारोहनक पश्चात् हुनक पुत्रलोकनिमे राज्याधिकारक लेल विवाद उत्पन्न भ' गेल आ' जकर परिणाम ई भेल जे राज्य दू भागमे बँटि गेल (1) दक्षिण मिथिलाक राजा भोगेश्वर राए भेलाह, जनिक पुत्र राए गणेश्वर आ' पौत्र राजा कीर्तिसिंह छलाह। हिनकहि विजयक वर्णन विद्यापति 'कीर्तिलता 'मे कएने छथि। (2) उत्तर मिथिलाक राजा भवेश्वर सिंह भेलाह, जनिक पुत्र देवसिंह आ' पौत्र शिवसिंह छलाह। एही शिवसिंहक विजय विद्यापतिकृत 'कीर्तिपताका 'मे वर्णित अछि।

भवेश्वर सिंहक अन्य पुत्रलोकनिमे एकटा त्रिपुर सिंह छलाह, जनिक पुत्र अर्जुन राय देवसिंहसँ राज्य बाँटि महान् सामन्त भ' गेलाह। अर्थात् ई अर्जुन राए महाराज शिवसिंहक पितृत्य, महाराज त्रिपुर सिंहक पुत्र छलाह आ' एहि तरहे महाराज शिवसिंहक पितिऔत भाए छलाह। हिनक अपर नाम शाम्बसिंह छलनि। एही अर्जुन रायक यशोगाथा विद्यापतिकृत 'कीर्तिगाथा 'मे वर्णित अछि। एहि प्रकारेँ ओइनवार वंशक तीनू शाखाक राज्य 1342-1400 ई. धरि समानान्तर रूपेँ चलैत रहल। एहि तीनू राज्यमे परस्पर घोर विरोध छल। कोनो एकटा राजाक दरबारमे प्रवेश करएबला दोसरक दरबारमे नहि जा सकैत छल, जकर प्रमाणक रूपमे उपर्युक्त तीनूमे चर्चित व्यक्ति सर्वथा भिन्न छथि। विद्यापति एकर अपवादक रूपमे छलाह। ओ अपन उदात्त व्यक्तित्वक कारण सभ दरबारसँ सम्मानित होइत रहलाह। हिनक तीनू अवहट्ठ रचनाक काल 1402 सँ 1414 ई. 'क मध्य राखल जाए सकैछ।

निष्कर्ष

कीर्तिगाथा महाकवि विद्यापतिक तेसर अवहट्ठकृति अछि जाहि मध्य चारि भाषा संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ठ आ' मैथिलीक पद गुम्फित अछि। मुदा, एहिमे संस्कृतक - 1, 2, 3, 15,16,17, 18, 32,33; प्राकृतक - 4, 19,20; मैथिलीक - 10,29,30 संख्यक पद अछि तथा शेष बहुलांश पद अवहट्ठहिमे अछि। एहि पोथीक प्रत्येक पद छन्दबद्ध अछि जे पदक संगहि लिखल अछि। दू विलासमे विभक्त एहि पोथीमे कुल 42 गोट पद अछि। एकर प्रारम्भिक आ' अन्तिम अंश खंडित अछि। पोथीक प्रारभ गणेश वंदनासँ होइत अछि जाहिमे कवि संसारक सकल विघ्नहर्ता गणेशकेँ नमन करैत एहन कामना करैत छथि जे हुनक ई वाणी अर्थात् कीर्तिगाथामे उद्धृत वाणी सज्जनक कण्ठमे बसि दिग्दिगन्त धरि पसरत। पश्चात् ओइनवारवंशीय उत्तर मिथिलाक लोकप्रिय सामन्त अर्जुन राएक यशोगान कएल गेल अछि। कीर्तिगाथाक दोसर विलासमे अर्जुन रायक राजदरबार, हुनक दैनन्दिन जीवन, प्रजागणक सुख-शान्ति, ज्ञान- विज्ञान आदिक वर्णन भेल अछि पश्चात् समस्त कथा शृंगाररससँ आप्लावित अछि, जाहि मध्य नायिकाक विविध अंग -प्रत्यंगक वर्णन, नायिका - प्रभेद, केलिक्रीडा आदिक वर्णनक पराकाष्ठा अछि।

एहि अर्जुन राएक पिता त्रिपुरसिंह, पितामह भवेश्वर सिंह छलाह। विद्यापतिक संपोषक प्रसिद्ध शिवसिंह ,जनिक पिता देवसिंह छलाह,सेहो एही भवेश्वर सिंहक पौत्र छलाह। एहि प्रकारेँ अर्जुन राए आ' शिवसिंह परस्पर पितिऔत छलाह। पूर्व राजपंडित ओइनवार वंशीय राजा महाराज कामेश्वर ठाकुर (1340) क स्वर्गारोहनक पश्चात् मिथिलामे तीन गोट राज शाखा

1342 -1400 ई. मध्य सामानान्तर रूपेँ राज करैत छल। एहिमे दक्षिण मिथिलाक राजा भोगेश्वर राय भेलाह, जनिक पुत्र राए गणेश्व आ' पौत्र महाराज कीर्तिसिंह भेलाह। एही कीर्तिसिंहक विजय-कीर्तिक वर्णन विद्यापति "कीर्तिलता"मे कएने छथि। उत्तर मिथिलाक राजा भवेश्वर सिंह छलाह जिनक पुत्र देव सिंह आ' पौत्र विद्यापतिक मित्र आ' संपोषक महाराज शिवसिंह (1402-1406) छलाह।एही शिवसिंहक वीरताक यशोगान "कीर्तिपताका"मे भेल अछि। तेसर शाखा छल भवेश्वर सिंहक दोसर पुत्र त्रिपुर सिंहक पुत्र अर्जुन राए (शाम्बसिंह)क, जनिक पुरुषार्थक वर्णन विद्यापति अपन "कीर्तिगाथा" मे कएने छथि। एहि प्रकारेँ विद्यापति तात्कालीन मिथिलाक तीनू शाखाक राजालोकनिक यशोगान अपन तीनू अवहट्ठ कृति कीर्तिलता, कीर्तिगाथा, कीर्तिपताकामे कएने छथि। एहि तीनू राज्यमे परस्पर विरोध छल। एक राजाक दरबारमे दोसर राजाक दरबारीलोकनिक प्रवेश वर्जित छल। जकर प्रमाणमे तीनू दरबारक चर्चित व्यक्ति सर्वथा भिन्न छथि।मुदा, महाकवि विद्यापति एकर अपवादक रूपमे छलाह।

निष्कर्षतः विद्यापतिकृत "कीर्तिगाथा" ने मात्र एकटा साहित्यिक ग्रन्थ थिक, अपितु ई प्राच्य मिथिलाक ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विरासतक दस्तावेज थिक।

संदर्भ सूची

[1] झा डा. विजयेन्द्र, 2024, मैथिली साहित्यक इतिहास (आदिकाल आ' मध्यकाल), मुजफ्फरपुर : प्रतिभा प्रकाशन

[2] झा डा. विजयेन्द्र (सं.), 2025, विद्यापतिकृत कीर्तिगाथा, दिल्ली: माण्डा पब्लिशर्स

[3] मिश्र डा. उमेश, डा जयकान्त (सं), 1960, कीर्तिपताका, इलाहाबाद: मैथिली साहित्य समिति

[4] झा डा. शैलेन्द्र मोहन (सं.), 1999, कीर्तिपताका, नइ दिल्ली: साहित्य अकादेमी

[5] झा. डा. शशिनाथ (सं.), 2020, विद्यापतिकृत "कीर्तिगाथा एवं कीर्तिपताका", ब्राह्मी प्रकाशन

[6] मिश्र डा. जयकान्त, 1988, मैथिली साहित्यक इतिहास, नइ दिल्ली: साहित्य अकादेमी

[7] 'श्रीश' डा. दुर्गानाथ झा, 1992, मैथिली साहित्यक इतिहास, दरभंगा

[8] श्रीवास्तव डा. वीरेन्द (सं.), 1973, कीर्तिपताका, (विद्यापतिकृत)

[9] 'व्यथित' डा. बालगोविन्द, 1988 द्वि. सं., मैथिली साहित्यक इतिहास, दरभंगा: भारती भवन

[10] VIDYAPATI AND HIS KIRTIGATHA: A CRITICAL ANALYSIS by Dr Bijayendra Jha & others

[11] TIJER- 160076; International Research Journal (International Peer- Reviewed & Referred Journal), ISSN:2349-9249., IMPACT FACTOR: 8.57 (Calculate by Google Scholar and Semantic Scholar/ Ai-Powered Research Tool) Licence by Creative Common-3.0, scopus Indexing journal, Published in Volume 12, Issue 10, October 2025

[12] Paper Id -TIJER2510074, Established.2014, Registration ID: TIJER-160076, PAGE- a714-a720, email: editor@tijer.org, Published URL: https://tijer.org/tijer/viewpaperforall.php?

[13] झा डा. दिनेश कुमार, 1979, मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास, पटना: मैथिली अकादमी